दूरियां मिटाता है अमृत राय और विजयदेव साही का साहित्यवाद

पंत संस्थान में दो दिवसीय विमर्श आरंभ

माधव कौशिक ने कहा- दोनों साहित्यकारों का प्रयागराज के लिए हिंदी साहित्य में बड़ा योगदान

संवाद न्यूज एजेंसी

पंत संस्थान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के पहले दिन अध्यक्षीय संबोधन देतेसाहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक (बीच में), उनके बगल में साहित्यकार नंद किशोर आचार्य, आलोक राय एवं निदेशक प्रो. बद्रीनारायण। संवाद

झूंसी। आधुनिक कहानी और नई कविता के तौर पर हिंदी साहित्य के दो ध्रुवों कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के पुत्र कहानीकार अमृत राय और नई कविता के साथ ही आलोचना के शिल्पी विजयदेव नारायण साही के साहित्य विमर्श पर शनिवार से गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ।

पंत संस्थान और साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी छह सत्रों में आयोजित की गई है। पहले दिन शनिवार को कथाकार अमृत राय और विजयदेव नारायण साही को शहर, समय और संस्कृति के संदर्भों में याद किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि किसी भी साहित्यकार को उसके शहर में याद करना बेहद जरूरी है। चंडीगढ़ रहते हुए इलाहाबाद के कई नामचीन साहित्यकारों से संबंध होने की वजह से इस शहर का एक चित्र उनके दिमाग में शुरू से ही रहा।

उनके जरिये इस शहर को ठीक से जाना। हिंदुस्तान का एक अकेला शहर यह था, जहां तीन धाराएं एक साथ थीं। प्रगतिशील भी यहीं और परिमल भी यहीं था। निराला, महादेवी, अश्क और रविंद्र कालिया जैसे साहित्यकार यहीं के थे। कहा कि साहित्य को बनाने में असहमति और स्वायत्ता शब्द ने बड़ा योगदान दिया है। उनका कहना था कि कथाकार अमृत राय और साही का लेखन उस वक्त के हिसाब से बेहद प्रासंगिक है।

कहा कि आज भी पूरे हिंदुस्तान में विभिन्न भाषाओं का साहित्य बसा हुआ है, लेकिन अब इलाहाबाद में बौद्धिक प्रमुखता कम हो गई है। हम बौनेपन में जी रहे हैं। कथाकार अमृत राय का जिक्र करते हुए कहा कि उनके साथ बड़ी विडंबना यही रही कि वह बड़े लेखक के पुत्र थे। कहा कि साहित्य अकादमी का यह दायित्व है कि इस मर्म को भी समझे। कहा कि अमृत राय और साही को पढ़कर लगता है कि इस शहर ने भी हिंदी साहित्य में बड़ा योगदान दिया है। दोनों रचनाकारों ने अपने समय और उसके यथार्थ को जिया।

अमृत राय अपने आसपास के जीवन से बहुत जुड़े हुए थे। कहा कि इन साहित्यकारों की चुकलेट जल्द ही एक किताब के रूप में प्रकाशित की जाएगी। बतौर मुख्य वक्ता कवि प्रो. नंद किशोर आचार्य ने कहा कि अमृत राय एवं विजयदेव नारायण साही दोनों हिंदी साहित्य के शलाका पुरुष रहे हैं। अमृत राय हमें सिखाते हैं कि कैसे एक लेखक किसी विचारधारा से जुड़ते हुए भी अपनी स्वायत्तता बनाए रखता है। पश्चिमी रोमांटिजियम और भारतीय छायावाद के अंतर की बात करते हुए वह विजयदेव नारायण साही के लेखन का संदर्भ देते हैं। कथाकार अमृत राय और विजयदेव नारायण साही का मानना था कि मनुष्य से मनुष्य के बीच की दूरी को खत्म करना ही हमारा साहित्यवाद है।

उन्होंने अज्ञेय का जिक्र करते हुए कहा है कि अज्ञेय ने नई कविता को नया मोड़ दिया था। कहा कि मनुष्य से मनुष्य के बीच की दूरी को खत्म करना होगा। यही हमारा साहित्यवाद भी है। विशिष्ट अतिथि आलोक राय ने कहा कि व्यक्ति और उसके संदर्भ का आकलन होते रहना चाहिए। कहा कि समसामयिकता को समझना भी बेहद जरूरी है। अमृत राय को अफसोस था कि वह केवल प्रेमचंद का बेटा होकर रह गए। वह पूरी तरह साहित्य के लिए समर्पित थे। इसके बावजूद हिंदी साहित्य में उनके ऊपर ध्यान नहीं दिया गया।

इससे पहले पंत संस्थान के निदेशक प्रो. बद्रीनारायण का कहना था कि हर शहर को समय की अपनी अवधारणा होती है। बदलते समय व समाज को समझने में शहर की साहित्यिक रचनात्मकता बहुत मददगार होती है। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अर्चना सिंह ने किया।

दूसरे तकनीकी सत्र 'अमृत राय का घर, शहर एवं साहित्य लोक' में आलोक राय ने अपनी स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि अमृत राय 'अमुमेंटेटिव इंडियन' परंपरा के हैं। उनका साहित्य इसी परंपरा का द्योतक है। तद्भव के संपादक अखिलेश ने अमृत राय के बारे में कहा कि उनका लेखन ढर्रे से उबारकर एकल दृष्टि बनाने की कोशिश है। अंतिम तकनीकी सत्र 'अनुवाद, नाटक एवं साहित्य: अमृत राय का समय एवं साहित्यिक संस्कृति' में प्रोफेसर प्रदीप भार्गव, चिंतक व अर्थशास्त्री एवं डॉ.रमा शंकर सिंह ने अपने विचार साझा किए।

शहर में विचार और संस्कृति पर आज होगा विमर्श

दो दिवसीय विमर्श के दूसरे दिन रविवार को शहर में विचार संस्कृति पर विमर्श किया जाएगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता चित्तरंजन मिश्र करेंगे। आलेख पाठ अनीता गोपेश, श्रीप्रकाश मिश्र और अनिल त्रिपाठी का होगा। इसके साथ ही पंचम सत्र में बहुविधि चुनौतियां: विजयदेव नारायण साही की रचनात्मक दुनिया, छठवें सत्र में सामाजिक विमर्श: विजय देव नारायण साही का परिप्रेक्ष्य विषयक परिचर्चा होगी।